Dr. Ranjeet Kumar

History department

H.D Jain college ara

Notes pg 1,cc1,unit –3

Topic:–इतिहासवाद क्या है

'इतिहासवाद' एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में पूर्ण है और इसका सम्बन्ध न तो किसी समय के इतिहास से है और न ही किसी इतिहासकार से, अपितु इसका प्रयोग हम सम्पूर्णइतिहास एवं समस्त इतिहासकारों के सातत्य में किया करते हैं।यह सभी वादों को अपने में समेटे हुए होता है और सबकी सम्मिलित परिभाषा भी हुआ करता है। इससे इतिहास के समस्त वादों का बोध तो नहीं होता, फिर भी वादों को ऐतिहासिकता का मूर्त रूप देने का माध्यम यही है। विभिन्न ऐतिहासिक वादों के मध्य यह उभयनिष्ठ है। इसका परिचय विषयगत आधार पर हो सकता है और जब हम यह कहते हैं कि अमुक समय दैवी अथवा ईश्वरवाद का था। अमुक भौतिकवाद का था, अमुक विज्ञानवाद का था, अमुक दर्शक मनोविज्ञानवाद का था तो उसी के साथ हम यह भी कह पाते हैं कि अमुक समय इतिहासवाद का था। विद्वानों ने भी जहाँ इतिहासवाद को समझाने और उसकी परिभाषाएँ देने का प्रयास किया है, वहाँ उनका भी यही अभिप्राय रहा है।

उक्त कथन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि इतिहासवाद भी किसी समय-विशेष की देन है। आरम्भ में इतिहासकारों द्वारा अपने संस्मरणों के आधार पर अपने पूर्वजों के कृत्यों को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से जो इतिहास लिखा गया,उसमें अतीत की घटनाएँ उस समय विवादपूर्ण हो उठीं, जब इतिहासकार अपनी-अपनी दृष्टि से अतीत की एक ही घटना का निरूपण करने लगते थे। विवाद को कम करने के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न सिद्धान्त स्वीकार किये जिनमें इतिहास का स्वरूप गूढ़ दर्शन बन गया। यह इतिहासवाद की प्रारम्भिक अवस्था का कारण था। किन्तु, लोगों ने इसे इतिहासवाद के रूप में उतनी गम्भीरता से नहीं लिया था। इस ओर ध्यानाकर्षण का समय प्रायः विश्वयुद्ध काल था।

सर्वप्रथम ट्रायेल्स ने जब इतिहासवाद का प्रयोग किया तो उसका मन्तव्य केवल इतिहास सम्बन्धी समग्र ज्ञान एवं अनुभवों से ही था। इस प्रवृत्ति के दो प्रमुख उद्देश्य थे.- 1. ऐतिहासिक ज्ञान और 2. प्रवृत्ति सम्बन्धी ज्ञान का अन्वेषण। कार्ल मैनहीम ने सन् 1924 में इतिहासवाद पर एक लेख लिखकर यह सिद्ध करने का यत्न किया कि ऐतिहासिक ज्ञान का प्रयोग आध्यात्मिक तथ्यों की अपेक्षा लौकिक अधिक होना चाहिए, क्योंकि इतिहास वस्तुतः सामाजिक मानव के कार्य- व्यापारों का अध्ययन होता है, न कि अदृश्य आध्यात्मिक तत्वों का अध्ययन होता था। सन् 1936 में जर्मन इतिहासकार मीरेके ने अपने इतिहासवाद के अन्तर्गत ऐतिहासिक चेतना के प्राचीन एवं आधुनिक अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया। जर्मनी

में इतिहास की समाजशास्त्र है। इतिहास में मनुष्य का अध्ययन ऐतिहासिक जीव के रूप में होता है। मनुष्य ऐतिहासिक है और इतिहास मनुष्य का अध्ययन है।

प्रो० ई० एच० कार ने इतिहास-लेखन के विषय में बतलाया है कि यह अतीत के परिकल्पनात्मक पुनर्निर्माण का एकमात्र साधन है। इसको व्याख्याप्रधान बनाने के लिए इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों का चयनशीलात्मक स्वरूप आवश्यक मानता है। इसी परिप्रेक्ष्य में इतिहासवाद को सम्बद्ध करते हुये प्रो० कार ने कार्ल ए० पापर की आलोचना करते हुये लिखा है कि प्रो० पापर अपने अनभिमत प्रत्येक विचार को इतिहासवाद से सम्बद्ध करते हैं, जो कि अस्पष्ट एवं भ्रामक होने से सर्वथा उचित नहीं कहा जा सकता।

इतिहासवाद को इतिहास-दर्शन के समान अर्थ एवं प्रयोग में लाने का कार्य एम० सी० डी० आर्की महोदय ने विशेष रूप से किया है। इतिहासवाद के प्रवर्तक माने जाने वाले हीगेल ने भी इतिहास सम्बन्धी ज्ञान को ही इतिहासवाद माना है। डिल्थे ने भी इसी आशय से ज्ञान को दो भागों में विभक्त करके प्रकृति के ज्ञान के लिए विज्ञान तथा मानव सम्बन्धी ज्ञान के लिए इतिहास को सुनिश्चित किया है। इनके अनुसार इतिहास आत्मप्रकाशीय होता है, इसलिए इतिहास को मस्तिष्क की अभिव्यक्ति कहना उचित है, क्योंकि इसकी रचना मस्तिष्क से होती है। डिल्थे का विचार हर्डर से मिलता-जुलता है। हर्डर ने भी कहा है कि "सम्पूर्ण इतिहास मन की अभिव्यक्तियाँ होती हैं।"

स्पेंगलर ने इतिहास को संस्कृतियों के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है। उसके इतिहासवाद का अभिप्राय सामाजिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में संस्कृतियों का अध्ययन तथा विश्लेषण है। कालिंगवुड के अनुसार इतिहासवाद को चिन्तनविधा के रूप में परिभाषित होना चाहिए, क्योंकि इतिहास में विचारों का ही अध्ययन होता है किंवा भी इतिहास विचारों का इतिहास होता है। यहाँ, हम देखते हैं कि क्रोचे तथा कालिंगवुड प्रायः एक जैसी ही बात करते हैं। दोनों ही ऐतिहासिक ज्ञान को मानव-सम्बन्धी ज्ञान का स्रोत कहते हैं और वैज्ञानिक विधाओं के प्रयोग से इतिहास को पृथक रखकर बात करते हैं।

इतिहासकार के क्षेत्र में मार्क्स के भौतिकवादी इतिहास की व्याख्या सर्वाधिक लोकप्रिय है। उनके द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त के अनुसार इतिहास का निर्माण एक सामाजिक व्यवस्था के अन्त और दूसरे के जन्म से हुआ करता है। सामाजिक व्यवस्था को नियन्त्रित करने के लिए वह उत्पादन और वितरण व्यवस्था पर विशेष बल देते हैं।

इतिहासवाद को मुख्य रूप से ऐसा ही जानना चाहिए कि वह ऐतिहासिक ज्ञान की विश्लेषणात्मक तथा परिकल्पनात्मक व्याख्या है जिसका लक्ष्य इतिहास में किसी विशेष अर्थ का अन्वेषण है। अग्रांकित वादों के अध्ययन से इतिहासकार को समझने में सहायता मिल सकेगी।